Prof. Khushbu kumari
Guest Teacher
Dept. of Political Science
N.S.J. College, Rajnagar, Madhubani, lnmu

Class - B.A - 3 (H)
Paper - VI

Topic - मॉर्गेन्थाउ का यथार्थवाद सिद्धांत

Lecture - 3

सिद्धान्त का विश्लेषण :—

(1) मानवीय व्यवहार पर आधारित — यथार्थवादी सिद्धान्त मानवीय व्यवहारों पर आधारित है। यह उन कारणों की खोज करता है जिनके आधार पर विश्व की समस्त राजनीति संचालित की जाती है।

(2) शक्ति की प्राप्ति के लिए प्रयास — प्रत्येक राष्ट्र अधिक से अधिक शक्ति प्राप्त करना चाहता है और उसी में राष्ट्रीय हित समझता है।

(3) नैतिकता विहीन नहीं — राजनीतिक गतिविधियाँ नैतिकता विहीन नहीं होती, बल्कि इनका महत्व राष्ट्रीय हितों की अपेक्षा गौण होता है।

(4) संघर्ष की आवश्यकता — राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए संघर्ष आवश्यक है किन्तु इस संघर्ष को (क) नियंत्रण द्वारा
(ख) रूपान्तरण द्वारा और
(ग) समझौते द्वारा रोका जा सकता है।

Page No.
Date

आलोचना —

मॉर्गेन्थाऊ के यथार्थवाद का जहाँ बहुत समर्थन हुआ वहीं इसके साथ ही कई विद्वानों द्वारा इसकी आलोचना भी की गई।
हॉफमैन इसे एक ऐसा सिद्धान्त मानते हैं जो अस्पष्टताओं और विसंगतियों से भरा पड़ा है।
आलोचकों के अनुसार मॉर्गेन्थाऊ के यथार्थवादी सिद्धान्त की मुख्य आलोचनाएँ निम्नलिखित हैं —

(1) एकपक्षीय सिद्धान्त — अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के दो पक्ष हैं — संघर्ष और सहयोग। यथार्थवाद के सिद्धान्त में मॉर्गेन्थाऊ ने केवल संघर्ष पक्ष पर ही बल दिया है सहयोग पक्ष पर नहीं। जबकि सहयोग पक्ष का भी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में उतना ही महत्व है जितना कि संघर्ष का।

(2) नैतिकता के महत्व की उपेक्षा — मॉर्गेन्थाऊ के यथार्थवाद की दूसरी आलोचना यह है कि उसने नैतिकता के महत्व की उपेक्षा की है।

(3) अवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित —

मॉर्गेन्थाऊ की यह मान्यता है कि मानव के स्वभाव से अन्तर्राष्ट्रीय

Scanned with CamScanner

व्यवहार जन्म लेता है, अस्पष्ट बात है। इसके साथ ही मॉर्गेन्थाऊ कहता है कि उसका सिद्धान्त मानव स्वभाव पर आधारित है परन्तु वह मानव स्वभाव की वैज्ञानिक विवेचना नहीं करता है। इस मॉर्गेन्थाऊ ने वैज्ञानिक पद्धति को न अपनाकर केवल सैद्धान्तिक रूप को ही स्वीकार किया है।

(4) आधुनिक समय में सामंजस्य नहीं – आज की बदलती हुई परिस्थितियों में मॉर्गेन्थाऊ का सिद्धान्त है कि राष्ट्र का लक्ष्य मात्र शक्ति प्राप्त करना तथा उसे अपने हित से ही प्रयोग करना उचित नहीं रह गया है। आज राष्ट्रों में सहयोग की प्रवृत्ति भी तेजी से उभर रही है।

(5) मॉर्गेन्थाऊ का यथार्थवाद युद्ध एवं विस्तारवाद का समर्थन करता है।

महत्व :-

उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद मॉर्गेन्थाऊ के यथार्थवादी सिद्धान्त का अपना महत्व है। के. डब्ल्यू. थॉम्पसन का मत है कि "मॉर्गेन्थाऊ विश्व-राजनीति के समकालीन लेखकों में सबसे महान है" केनेथ वाल्टस ने मॉर्गेन्थाऊ के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा है कि "मॉर्गेन्थाऊ से हमें अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का कोई सुनियोजित सिद्धान्त चाहे न मिलता हो, पर उससे सिद्धान्त रचना के लिए पर्याप्त सामग्री अवश्य मिलती है।"

Khushbu Kumari 26th Aug. 2020